ISSN 2278-8808
SJIF 2015: 5.403
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

आधुनिकता के दौर में विकास और शिक्षा

कैलाशनाथ गुप्ता, Ph. D.

एसो0. प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष बी0एड्0, एस0जी0पी0जी0 कालेज, मालटारी, आज़मगढ़

Abstract

वास्तव में आधुनिकता व विकास के मूल में शिक्षा ही स्थित होती है किन्तु वर्तमान शिक्षा व्यवस्था जिस आधुनिकता व विकास की पोशक है वह दीर्घकालिक व सार्वभौमिक नहीं है। शिक्षा का क्या लक्ष्य है, क्या उद्देश्य है, किन बिन्दुओं को शिक्षा में भाामिल होना चाहिये, विकास की वास्तविक अवधारणा क्या है तथा किस प्रकार शिक्षा हमारा निर्माण समाजोपयोगी के रूप में कर पायेगी तथा मानव को मानवीयता से पोशित कर सम्पूर्ण मानव के रूप में स्थान दिया जायेगा।

Scholarly Research Journal's ***is licensed Based on a work at*** *www.srjis.com*

सम्पूर्ण विश्व में आज शैक्षिक दशा को लेकर सम्पूर्ण जनमानस परेशान है चाहे वह किसी स्तर पर क्यों न हो। सरकारी और गैरसरकारी प्रभाग अपने अपने तरह से शिक्षा व्यवस्था में बदलाव को लेकर प्रयासरत है फिर भी लोग परेशान हैं। शिक्षा के विभिन्न स्टेक होल्डर यथा छात्र, अध्यापक, अभिभावक, प्रका ाक, प्र ाासन, संस्थान सभी एक दूसरे के प्रति कई प्रकार की मान्यतायें लेकर आगे बढ़ते हैं। शिक्षा के लक्ष्य को लेकर विभिन्न घटकों के बीच सार्थक संवाद को विस्तारित करना होता है। आज एक प्रश्न और है कि शिक्षा का वर्तमान में उद्देश्य क्या है। क्या शिक्षा नौकरी का साधन मात्र है या तथ्यात्मक विवेचना मात्र है या शिक्षा सामाजिकता है या शिक्षा व्यक्ति के जीने की कला है। हम जानते हैं कि शिक्षा वास्तव में समझ विकसित करने की कला है जिससे बालक में सही समझ विकसित हो ताकि वह शिक्षा से जुड़े विभिन्न अवयव, पाठ्य सामग्री, अध्ययन विधि, पुस्तकों के रख रखाव, भवन आदि सामग्री के रूपमें बालक में सही समझ विकसित किया जाये, अतः शिक्षा जीने की कला सिखाने वाला माध्यम है किन्तु यह शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य नहीं हो सकता है।

वर्तमान समय में पुस्तकों को मूल्य निरपेक्ष बनाने का प्रयास करने के बाद भी ऐसा करना सम्भव नहीं होता क्योंकि प्रत्येक पाठ का कुछ न कुछ मूल्य होता है। आजादी से पूर्व भारत में दैशिक मूल्यों की अवहेलना हुई क्योंकि ब्रिटिश के लोग पाश्चात्य मूल्यों को मानते थे। वर्तमान दौर की सबसे

बड़ी समस्या यह है कि हम दो भागों में बँटकर दो समाज का निर्माण हो रहा है जिसमें प्रथम भाग तो अपने सभी कार्यों के लिए पश्चिमी विचार की तरह देखता है किन्तु इसकी संख्या कम है। दूसरा हिस्सा वह है कि वह अपने दैशिक भूमिका में पाता है। किन्तु देखा यह जाता है कि पश्चिमी विचारधारा को मानने वाले लोग दैशिक विचारधारा वालों पर हावी रहते हैं जबकि यह सत्य है कि बिना अपनी जड़ से जुड़े हम कोई कार्य नहीं कर पाते हैं। दोनों प्रकार के समाज में कोई एक रूपता नहीं पायी जाती है। इनको जोड़ने के लिए हमें परंपराओं व मूल्यों की संचयन की तरफ बढ़ना चाहिए। समाज का मूल्य गुण है परंपरा और देशज जानकारी आवश्यक है। पश्चिमी ज्ञान या विचार देशज परम्पराओं का स्थान नहीं ले सकता है। आज पिछड़ेपन के विरोध में जिस नियोजित विकास की बात की जाती है उसे हमे देशज नजरों से देखना होगा। शिक्षा के बारें में 1931 के लंदन के चेथम हाउस में गाँधी ने कहा था कि अंग्रेजों के आने से पूर्व भारत के लोग आज के भारत से अधिक साक्षर थे जबकि आज स्कूलों की संख्या बड़ी है। जबकि 15% द्विज जातियाँ हैं तथा 67% द्विजेत्तर जातियाँ हैं। लड़कियों के नामांकन की स्थिति भी काफी ठीक थी आज यह पश्चिमी विचारधारा ने ही नकारात्मक स्थिति पैदा की है। यह विकास का कौन सा माडल है जिसमें लोग अल्पसंख्यक बनाम बहुसंख्यक में फंस गये हैं।

आज की आधुनिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक एक विशेश प्रकार की अवधारणा को अपना बुनियाद बना चुकी है। यह तथाकथित विकास है जो कि आधुनिकता को प्रचारित करता है जिसका मुख्य गुण पश्चिम के उपभोक्तावाद से जुड़ा है। इसमें मनुश्य को मात्र शरीर पुंज मानकर सुविधा के साधन एकत्र करने पर बल दिया जाता है। इसमें मनुश्य के ''मैं'' स्वरूप पर कहीं दृश्टिपात नहीं होता है पश्चिमी विचारधारा से निकला राज्य राश्ट्र के हित ढाँचा वैयक्तिक अपराध को राज्य शासित अपराध से रोकने की विचारधारा पर निर्भर होता है। आधुनिक विकास की दौड़ में जड़ प्रकृति और चराचर जगत के जीवों का शोशण बढ़ गया है। इसी कारण से प्राकृतिक असंतुलन प्रत्येक स्थान पर दिखायी पड़ता है। पारस्परिक अन्योन्याश्रित शून्य होती जा रही है। मनुश्य की सुविधा संग्रह की चाह ने जड़ व जीव प्रकृति के शोशण का कारण बनकर केवल अन्य जीवनधारियों को ही नहीं अपितु मानव को भी खतरे में डाल दिया है। आज जड़, प्राण, जीव और जमावस्था का सहअस्तित्व असंतुलित हो गया है। ऐसी दशा में तत्काल आवश्यकता है कि हम शिक्षा के आधारभूत ढाँचे को स्थापित करें।

प्रत्येक समाज की अपनी एक जीवन दृश्टि होती है। उस जीवन दृश्टि से अपने समाज को संचालित किया जाता है जिससे उस समाज की मान्यतायें भी रूढ़ हो जाती हैं। भारत के गुलाम होने के कारण आज भारत में कई सारी गतिविधियां पाश्चात्य से प्रभावित हैं। आज की शिक्षा ने हमारे युवाओं को उनके समाज, संस्कृति और परिवेश को नश्ट किया है। आज का युवा सोचता है कि जो कुछ भी अपना है वह निरर्थक व त्याज्य है इसी कारण से उसमें दीनता हीनता और दयनीयता का भाव भरता है। आज हम जिसे आत्मसम्मान कहते हैं वह निरपेक्ष आत्म सम्मान न होकर अपितु दूसरों को

पछाड़ने के कारण उपजी अहमन्यता है। यह सापेक्ष आत्मविश्वास दूसरे की तुलना पर आधारित है। सम्भवतः समाज में आज जो हिंसा दिखलाई पड़ती है उसके मूल में यही स्थित है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली यूरोप में 250–300 वर्शो पूर्व विकसित हुई थी। जिन–2 देशों में यूरोप के उपनिवेश स्थापित हुये थे वहाँ की स्थानीय परंपरा नश्ट करके पा चात्य सभ्यता को स्थापित किया गया था क्योंकि माना जाता था कि विकास का केवल एक माडल होता है जो कि सर्व स्वीकार्य होना चाहिये। वह जिस प्रकार आधुनिकता पर अवलंबित होता है वही मानव मात्र के लिये कल्याणकारी है तथा स्थानीय रूप में जो भी परम्परायें हैं वह विकास के मार्ग में अवरोधक हैं तथा अविकसित सोच की उपज है। इसी कारण इनको छोड़ देना श्रेयस्कर होता है। अपनी विचारधारा को आधुनिक मानकर सर्वदेशीय व सर्वकालिक श्रेश्ठता के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया। आधुनिक शिक्षा में वैयक्तिक भेद का स्थान नहीं दिया गया।

शिक्षा के तहत होना यह था कि बालक केवल तथ्यों को जाने ही नहीं अपितु वह स्वयं को अभिव्यक्त के लिये तैयार भी करे। शायद वर्तमान में यह अवधारणा तुप्त है। इसका कारण वर्तमान शिक्षा अभी भी पुरातन काल की अवधारणा पर आधारित है आज छात्र यांत्रिक जीवन जी रहा है। 2 से 10% लोग ही समाज की दिशा निर्धारित कर रहे हैं शेश 90% लोगों को केवल लकीर का फकीर बनकर काम करना होता है। आज के समय में भी WB, IMF, WTO आदि के गुलाम बनकर कार्य कर रहे हैं, हमारा अपना कोई अस्तित्व नहीं है। आज सार्वजनिक जीवन से दे ाज मूल्यों का अभाव है।

मान्यतायें आज के समय में मूल्य रहित हो गयी हैं जबकि वास्तविकता तो यह है कि यदि मूल्यों पर मान्यतायें बनेगी तो वह व्यवहार संगत होगी तथा अनुभव व मान्यता के बीच दरार नहीं होगी। जब अपने अनुभव और व्यवहार पर मान्यतायें नहीं बनती हैं तो शोशणकारी होती हैं। आधुनिक शिक्षा ने जिन मान्यताओं को खड़ा किया है वे सम्भवतः ऐसी ही हैं भले ही हम बालाधिकार, मानवाधिकार, महिला उत्थान, लोकपरता की बात करें।

शिक्षा वह मानवीय गुण है जो हमें वाह्य तत्वों और इन्द्रियों व इससे इतर ग्राह्य प्रतिमानों को समझने में मदद करती है ताकि हम अपना विवके जागृत कर सके। शिक्षा का मतलब यह नहीं है कि कोई कुछ भी कहे हम उसे स्वीकार कर लें अपितु स्वयं के द्वारा सत्यापन की शिक्षा है। शिक्षा केवल सुविधा एकत्रीकरण नहीं है यह सर्व सुखकारी है। शिक्षा मात्र जीविकोपार्जन का साधन नहीं है यह स्वयं व समाज के जीवन मूल्य की स्थापना का साधन है। हमारी क्रियाशीलता निरंतर सुख व समृद्धपूर्वक जीने में है। समाधानपूर्वक, सह अस्तित्वपूर्ण, सामंजस्यपूर्ण जीना ही सुख है सभी कुछ अस्तित्व में रहे यही शिक्षा है।

वर्तमान शिक्षा में जीने की सही कला विकसित करना जीवन का लक्ष्य नहीं मानती है जबकि यह भी उद्देश्य होना चाहिए। शिक्षा कभी शून्य में नहीं विचरती वह अपने परिवेश व समाज को प्रभावित करती व प्रभावित होती है।

अध्यापक प्रशिक्षण के नाम पर जो हो रहा है वह भी बालक को निश्क्रिय बना रहा है। कक्षा में एक तरफ वातावरण है बालक केवल श्रोता बनकर काम करता है, केवल सुनना है संवाद नहीं है।

वर्तमान शिक्षा हमारे समाज की आव यकताओं स्मृतियों व सृजनात्मकता को जीवंत बनाये रखने के बजाय विरोध का कार्य कर रही हैं। आज शिक्षा को सार्वजनीकरण के नकारात्मकता को समझना होगा विकास और आधुनिकता की परिभाशा वैश्वीकरण से परे स्वधर्म के अनुसार परखनी होगी। हमें अपने को स्थापित करने के लिए निजी अनुभवों को महत्व देना होगा। मान्यता व अनुभव के मध्य दूरी कम करना होगा। वैश्वीकरण के चलते आज शिक्षा भाोशण का औजार है उससे बचना होगा। अनेक दृश्टियों से जिस विपन्नता की स्थिति में आज हम है और जो ठहराव और टूटन आज दिख रहा है उससे निजात मिलेगी जब हमारी अवधारणा

'सर्वे भवन्ति सुखिना' की होगी तभी वास्तविक विकास होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

हिन्दुस्तान समाचार पत्र अगस्त 23, 2015 वाराससी
राष्ट्रीय सहारा साप्ताहिक समाचार पत्र 26 जुलाई, 04 अगस्त 2014 नई दिल्ली
राष्ट्रीय सहारा (हस्ताछेत्र परिशिष्ट) 20 जुलाई 2013 लखनऊ संस्करण
योजना मानसिक पत्रिका प्रकाशन एव सूचना प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली सितम्बर 2015
अखंड ज्योति शान्ति कुंज हरिद्वार सितम्बर 2015